Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

धूमिल के काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण

नेहा चौबे
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

शोध सार

समकालीन कविता में धूमिल मील के पत्थर के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। इनके बिना समकालीन कविता की मुकम्मल तस्वीर बनती दिखाई नहीं देती। धूमिल की कविताओं में आम जनता, किसान, मजदूर, श्रमिक और उपेक्षित लोग, जिनका निर्ममता से शोषण किया जा रहा है, उनके प्रति अपनी आवाज़ को निर्भयता और दृढ़ता से उठाने का प्रयास किया गया है। धूमिल ने सर्वहारा वर्ग के प्रति मानवीय संवेदना तथा सदियों से हो रहे शोषण को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। वे शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति के साथ अपनी वेदना को वाणी देने का प्रयास करते हैं। जनशक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी कविता को आधार बनाया है। शोषित वर्ग, पूंजीवादी तथा सत्ताधारी वर्ग का विरोध किया है। हिंसा का विरोध करते हुए अहिंसा को मानवतावाद से सफलतापूर्वक जोड़ने की कोशिश करते हैं। इनकी कविता आम जनता को मानवीय मूल्यों की गहराई तक पहुँचती है और उन्हें स्थापित भी करती है। इनकी कविता समाज, व्यवस्था तंत्र और राजनीतिक पृष्ठभूमि को उजागर करती है। उनकी कविता आम आदमी के अनुभव को महसूस करती है और उन परिस्थितियों की ज्वाला को आत्मसात भी करती है। वे समस्त जनता की आकांक्षाओं को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कृति भारतीय जनतंत्र में स्वतंत्रता, न्यायपूर्णता, समानता, बंधुत्व और धर्मनिरपेक्षता को काफी महत्व देने का प्रयास करती है। मूल रूप से स्वतंत्रता के पश्चात् समाज में पूंजीवादी व्यवस्था का विकास तथा जनसाधारण के शोषण के विरुद्ध की वाणी इस दौर की कविताओं में प्रकट होती है। उनकी कविताओं के माध्यम से जनता की आशा की अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप से पाठक तक पहुँचाया जा सकता है। इससे यह साफ पता चलता है कि समकालीन कवियों की दृष्टि काफी व्यापक और सजग है। इनकी वैचारिक दृष्टि और भाषा सरल होने के बावजूद भी पाठक के ह्रदय स्थल को उद्वेलित करती है। धूमिल प्रगतिशील लेखन सम्मेलन से जुड़े थे तथा सभी जगह अपनी संलग्नता और तीक्ष्णता का परिचय दिया है। समकालीन हिंदी कवियों में रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, आलोक धन्वा, अरुण कमल, चंद्रकांत देवताले और राजेश जोशी का प्रमुख स्थान है। इन कवियों ने मोहभंग, जनतंत्र, शोषण और आक्रोश के दौर में व्यवस्था के विरुद्ध आम आदमी की पीड़ा और यथार्थवादी भाव को व्यक्त किया है।

बीज शब्द: समकालीन काव्य, आम जनता, सर्वहारा, व्यवस्था तंत्र, यथार्थवाद, राजनीतिक व्यंग्य, अमानवीयता, वर्तमान परिस्थिति

मूल आलेख

हिंदी साहित्य के साठोत्तरी काव्य परिदृश्य में धूमिल का स्थान एक विशेष कलाकार के रूप में स्थापित है। इनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना, राजनीतिक व्यंग्य और गहरी मानवतावादी दृष्टि का तीखा प्रहार होता है। उनके काव्य में आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष, लोकतंत्र के प्रति मोहभंग तथा अस्मिता को केंद्र में रखकर विशाल काव्य परंपरा को आगे बढ़ाया है। उनके कुल तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। धूमिल के जीवनकाल के आरंभिक दौर की कृति तथा अंतिम कृति के रूप में 'संसद से सड़क तक' सन् 1972 में प्रकाशित हुई। उनकी द्वितीय कृति 'कल सुनना मुझे'

मरणोपरांत रचना है, जिसे सन् 1979 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। अंतिम काव्यकृति 'सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र' सन् 1984 में प्रकाशित हुई। इनके तीनों काव्य संग्रह की विशेषताएँ मोहभंग, व्यवस्था तंत्र, व्यंग्य और आम लोगों के जीवन से जुड़ी हैं। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से समाज के नग्न यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और सफल भी हुए हैं। उनकी कविताओं में अपशब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ है। यह हकीकत है कि जो व्यक्ति जिस परिस्थिति से रूबरू होता है, वह उससे विरक्त होकर अपशब्दों के प्रयोग का शिकार हो जाता है। वास्तव में धूमिल ने विभिन्न काव्य आंदोलनों की चुनौतियों का सामना करते हुए एक अलग व्यक्तित्व बनाने का प्रयास किया है। 'भाषा की रात' में उन्होंने लेखन की प्रक्रिया को समझते हुए कहा है कि "युवा लेखन के लिए राजनीतिक समझदारी जरूरी है, बिना राजनीतिक समझदारी के आज का लेखन संभव नहीं।"[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष बाद ही तेलंगाना किसान क्रांति सन् 1949 में अमानवीय ढंग से सत्ता के दमन का शिकार हुई। यह क्रांति पहली बार व्यापक अर्थ में साहित्यकारों की आँखें खोलती है। इस क्रांति से ही प्रजातांत्रिक सत्ता के दमन एवं मोहभंग की शुरुआत होती है। इस काल के दौरान देश भर का संघर्ष लगभग सभी भाषाओं की भिन्न छोटी–बड़ी पत्रिकाओं के माध्यम से परिलक्षित होता है। धूमिल ने कविताओं में मानवीय दृष्टि के छोटे–छोटे बिंबों का सौंदर्यबोध के रूप में वर्णन किया है—

बिखरी है मेरे आंगन में
सोने जैसी धूप
है पछोरती उषा सुहागिन
उसको भर–भर सूप
या
रात ढले
हेम रश्मि माल गले।[2]

धूमिल सन् 1973 में बांग्ला के लोकप्रिय, क्रांतिकारी कवि सुकांत के काव्य संकलन 'छाड़पत्र' से प्रभावित होकर 'पारपत्र' का अनुवाद करते हैं। इस कविता का विषय व्यवस्था पर व्यंग्य, पहचान, संकट और विडंबना से जुड़ा है। सुकांत की कृति उनके जीवन पर गहरी छाप छोड़ती है; अपनी रचना शैली के माध्यम से वह आज भी हमारे बीच उपस्थित जान पड़ते हैं। बांग्ला के सुकांत और हिंदी के धूमिल, दोनों कवियों की एक खास विशेषता है कि वे अल्पायु में ही कलाकार के रूप में पहचाने गए। उनकी रचना प्रक्रिया वर्ग संघर्ष के प्रति पाठक का ध्यान आकृष्ट करती है। देशकाल की स्थितियों से जूझते काव्य के प्रति लगाव से अवगत कराने का प्रयास किया है और सफल भी हुए हैं। इनकी प्रत्येक रचना फूलों के गुच्छे के समान है; जिस प्रकार फूलों के गुच्छे में फूल सुंदर लगते हैं, उसी प्रकार इनकी रचनाएँ भी। सुकांत से प्रेरित धूमिल की काव्य दृष्टि उनके पथ का अनुसरण करती है। 'पारपत्र' कविता के माध्यम से सुकांत ने बच्चे के जन्म की तुलना उसके अधिकार तथा उसकी पहचान से की है। किसी अन्य देश जाने के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता पड़ती है, उसी तरह एक बच्चे के जन्म के पश्चात् उसकी पहचान स्वरूप पत्र माता–पिता को दिया जाता है। इस 'पारपत्र' के माध्यम से कवि ने समाज के नग्न यथार्थ का सुंदर चित्रण इन पंक्तियों के माध्यम से किया है। उनकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

जिस बच्चे ने आज रात जन्म लिया है
उसी से खबर मिली है:

उसे एक पारपत्र मिला है,
नई दुनिया के दरवाजे पर इसलिए अपना अधिकार जताता है
जन्मते ही उसका ऊँचे स्वर से रोना।[3]

साठोत्तरी कविताओं में परिवर्तन के साथ समाधान और उपाय पर भी ध्यान दिया गया है। सदियों से शोषित समाज के इस वर्ग को जागरूक करने की ओर कवि अग्रसर होते हैं। शोषित जनता अपने अधिकार के लिए शोषण का शिकार हो रही है। उनकी कविता झूठ का पर्दाफाश करती है—जैसे सोशल मीडिया में गरीबी, भुखमरी तथा सच्ची घटनाओं से परे राजनीतिक मुद्दों को सनसनीखेज रूप में दिखाया जाता है, और सत्य घटनाओं की उपेक्षा की जाती है। कवि ने सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों की रुचि के अनुसार फैलाए जाने वाले प्रोपोगेंडा पर तंज कसा है। देश में उचित की अपेक्षा अनुचित चीजों को तामझाम के साथ प्रदर्शित किया जाता है। कवि भिन्न-भिन्न कविताओं के माध्यम से लोगों को जागरूक होने का अवसर प्रदान करने की कोशिश करते हैं। देश के मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास भी करते हैं। सच तो यह है कि संसाधनों के दिखावे में देशी मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं, या यूँ समझ सकते हैं कि बिकते जा रहे हैं। इनकी अधिकतर पंक्तियाँ जनता को उच्च भूमि पर ले जाने का कार्य करती हैं। 'संसद से सड़क तक' कविता में लिखते हैं—

कल मैंने कहा था
कि वह दुनिया, जिसे ढकने के लिए तुम नंगे हो रहे थे,
उसी दिन उधर गई थी
जिस दिन हर भाषा
तुम्हारे अंगूठा-निशान की स्याही में डूबकर
मर गई थी।[4]

उनकी अधिकांश कविताएँ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषमताओं के साथ वर्ग-चेतना, नारी सुरक्षा एवं नक्सलवादी आंदोलन की ओर संकेत करती हैं। कवि ने कविताओं के माध्यम से अपनी निजी धारणा को प्रस्तुत किया है। उनकी कविता पाठक को सत्य से सराबोर करती हुई 'तीन आदमी' के माध्यम से काव्य की संरचना प्रकट करती है। पहला आदमी किसान तथा मजदूर वर्ग है, जो अपनी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए मेहनत करता है, यानी रोटी बेलने वाला वर्ग। दूसरा आदमी आम जनता है, जो उपभोक्तावाद से उत्पादित रोटी का उपभोग करती है, यानी रोटी खाने वाला वर्ग। तीसरा आदमी भ्रष्ट नेता, पूंजीपति या सत्ताधारी है, जो बिना मेहनत के उपभोग को केवल संसाधनों के लिए उपयोग करता है, यानी रोटी से खेलने वाला वर्ग। उनकी कविता 'रोटी और संसद' में तीन आदमी के माध्यम से समुचित लोकतांत्रिक व्यवस्था को दर्शाया गया है। यह कविता भूख, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार तथा असमानता के खिलाफ सशक्त आवाज है। वे लिखते हैं—

एक व्यक्ति
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है

"मैं पूछता हूं—
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है।"[5]

वर्तमान व्यवस्था में सरकारी योजनाओं की असंगतियों और क्रांति के बावजूद भी आम आदमी की रोटी, कपड़े और मकान की न्यूनतम जरूरत पूरी नहीं हो पा रही है। उनकी कविता देश की दशा का सत्य चित्र प्रस्तुत करती है। अतः यह मूल मुद्दों से हटाकर नेताओं द्वारा उपेक्षित भावनात्मक मुद्दों के माध्यम से जनता को गुमराह करने की प्रवृत्ति को उजागर करती है। दिलचस्प विज्ञापनों और धर्म के नाम पर सांप्रदायिक दंगे कर चुनाव जीतने की कोशिश करना ही इनका परम लक्ष्य बन गया है। उनकी कविताओं से यह साफ पता चलता है कि धूमिल ने जो साठ के दशक में लिखा, वह आज के संदर्भ में भी परिलक्षित होता है। भारत की स्थिति पहले अंग्रेजों के हाथों नष्ट हुई, और अब व्यवस्था तंत्र के द्वारा। आज शिक्षित व्यक्ति भी भोगवाद की स्थितियों से जूझ रहा है। यह सारी विडंबना देश के व्यवस्था तंत्र का नतीजा है। आज समाज सूदखोरी, चोरबाजारी तथा अवैध कार्यों का गुलाम है। उनकी कविता आम लोगों के प्राण है। धूमिल ने भूख से व्याकुल व्यक्ति को 'विज्ञापन' घोषित करते हुए अपनी कविता में लिखा है—

'भूख से मरा हुआ आदमी
इस मौसम का
सबसे दिलचस्प विज्ञापन है और गाय सबसे सटीक नारा।'[6]

आधुनिक जनतंत्र पर आक्षेप करते हुए धूमिल कहना चाहते हैं कि जनता का तंत्र ही कल्याण के लिए शासन करता है, किंतु व्यवहारिक पक्ष बिल्कुल इसके विपरीत है। उनकी लंबी कविता स्वाधीनता आंदोलन के पश्चात् भारत में घटित स्थिति को प्रहसन का रूप देती है। पहले जो देश सोने की चिड़िया हुआ करता था, वह आज सत्ता का गुणगान करता है। कारण यह है कि चुनाव ही जनतंत्र का गठन करता है; उसके बाद सत्ता वर्ग अपनी इल्म से दुनिया चलाता है। आज की स्थिति किसी के हित के लिए नहीं, बल्कि विश्वासघात के साथ चल रही है। आमजन के मूल्यों की प्रतिष्ठा वे व्यंग्य, अर्थात् प्रहसन के माध्यम से करते हैं। इसलिए कवि ने जनतंत्र को एक भ्रम घोषित करते हुए लिखा है—

उसको समझा दिया गया है कि यहां
ऐसा जनतंत्र है, जिसमें/ जिंदा रहने के लिए घोड़े और घास को
एक जैसी छूट है
कैसी विडंबना है/ कैसा झूठ है![7]

सर्वेश्वरदयाल ने भी समाज की विमुखता के प्रति आरोप का निराधार चित्रण अपनी कविताओं में किया है। धूमिल के समान सर्वेश्वरदयाल भी सामाजिक अवहेलना का वर्णन करते हैं। वर्तमान समय या आने वाले समय का दृश्य आधुनिक कवियों को पहले से ही ज्ञात हो गया था। आज के संदर्भ में देखा जाए तो यथार्थ का जीवंत रूप में वर्णन किया जाता है। नई कविता के कवियों में आत्मविज्ञापन का समर्थन तथा निराशा की अपेक्षा आशा पर अधिक महत्व दिया गया है। उनकी कविता में कलात्मक, भावनात्मक तथा लयात्मक अभिव्यक्ति अनुभव के माध्यम से व्यक्त हुई है। आचार्य शुक्ल का कथन है कि कविता का वर्णन करते हुए मनुष्य के हृदय को पत्थर की जड़ता से तुलना करते हुए उसे भाव की उच्च भूमि पर ले जाने की बात कही गई है। उच्च भूमि का अर्थ है कि कविता के जुड़ाव तथा भाव को बढ़ाया जा सके। तत्कालीन कवियों में हृदय की मुक्त अवस्था का वर्णन नाम मात्र ही देखा जाता है, क्योंकि काव्य की प्रकृति समयानुसार परिवर्तित होती है। बहरहाल, काव्य को परिपाटी से मुक्त होकर ही रचना उसकी मुक्तावस्था है। आधुनिक

काव्य स्वतंत्र रूप से काव्य परंपरा को आगे बढ़ाने के पक्षधर हैं। अपनी कविता में 'सत्य की चोट', 'बाहरी दृष्टि' तथा 'सच्ची चोट' जैसे अनेक शब्दों के माध्यम से जीवन की गंभीरता को टटोलना नए कवि-कर्म की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

मैं नया कवि हूं
इसी से जनता हूं
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है;
मैं नया कवि हूं
इसी से मानता हूं
चश्मे के तले ही दृष्टि बहरी होती है।[8]

धूमिल का मोहभंग शर्मनाक दौर का है। उनका मोहभंग आज़ादी से, जनतंत्र से तथा समाजवाद से है। इन सभी पवित्र तथा न्यायवादी आदर्शों को संवेदनशील व्यक्ति ने मोहभंग से जोड़ने का प्रयास किया है। अंग्रेजी शासन के बाद जो देश आज़ादी का सपना देख रहा था, वह अब निष्फल रह गया। अब शासक और शोषण का मार्ग एक हो गया है। देश के आम लोग शोषित हो रहे हैं; वे तत्कालीन समय तक भी होते रहे और आगे भी होते रहेंगे। देश की जनता कठपुतली के समान हो गई है। लोग अपनी सुविधा देखकर कार्य कर रहे हैं। पूरे देश की स्थिति अब एकता और भाईचारे को एकत्र करने की नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करने की हो गई है। आज के संदर्भ में जो हासिल कर रहे हैं, वह अपने परित्यक्त जीवन का बोझ ही है। कवि इन समस्त विषयों से परिचित हैं। वे चौथे आम चुनाव को महसूस करते हुए लिखते हैं—

सिर्फ़ एक शोर है
जिसमें कानों के पर्दे फटे जा रहे हैं
शासन सुरक्षा रोज़गार शिक्षा...
राष्ट्रधर्म देशहित हिंसा अहिंसा...
सैन्यशक्ति देशभक्ति आज़ादी वीसा...
वाद बिरादरी भूख भीख भाषा...
शांति-क्रांति शीतयुद्ध एटम बम सीमा...
एकता सीढ़ियाँ साहित्यिक पीढ़ियाँ निराशा
झाँय-झाँय खाँय-खाँय हाय-हाय साँय-साँय...[9]

ऐसे हम देख सकते हैं कि धूमिल की कविता में सत्ताधारी वर्ग तथा पूंजीवादी व्यवस्था तंत्र के अमानवीय चेहरे को सामने लाने का प्रयास किया गया है। हिंदी साहित्य में नई कविता और अकविता के दौर के प्रमुख कवियों में राजकमल चौधरी ने उन्मुक्त भोगवाद को आत्मघात की ओर उन्मुख किया है। मौत का निवाला बन जाने वाले राजकमल चौधरी का कथन है— "मुझे दहशत नहीं होती यह सुनकर कि एक पूरा मुल्क आग में झुलसा दिया जाएगा।"10 देश में हो रहे मानवतावादी विचार को वर्तमान के संघर्षपूर्ण जीवन के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। उन्होंने अपनी साहित्य परंपरा के अध्ययन से पुरानी रूढ़ियों को तोड़ने तथा उसका विकास करना ही सृजनात्मक और विवेकपूर्ण संघर्ष माना है। उनकी भाषा ही ईमानदारी की पहचान है। उन्होंने अपनी काव्य-प्रकृति के माध्यम से अकविता को कविता की ओर उन्मुख किया। उन्होंने जनवादी कविता की ओर अपना कदम बढ़ाया। राजनीतिक उपेक्षा ही उनके गुस्से को

रेखांकित करती है; वे भारतीय जनता की वास्तविक विधायिका को देखना चाहते हैं। धूमिल की कविताओं में तत्कालीन समय की घटित घटनाएँ समुद्री तरंगों की भाँति धरातल पर गिरती हैं। इनकी कविता सशक्त हस्ताक्षर के रूप में यथार्थ की भूमि पर खड़ी होती है। उनकी कविताएँ सामाजिक जीवन का दस्तावेज़ हैं, जो अपने समय की दशा को उजागर करती हैं। धूमिल की कविता केवल पाठक को सोचने के लिए ही प्रेरित नहीं करती, बल्कि समाज बदलने का मार्ग भी दिखाती है।

निष्कर्ष

धूमिल का काव्य मूलतः मानवतावादी संवेदना पर आधारित है, जिसमें आम आदमी के जीवन-संघर्ष, शोषण, असमानता और व्यवस्था की विडंबनाओं का तीखा एवं यथार्थपरक चित्रण मिलता है। उनकी कविताएँ केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियों के विरुद्ध एक सशक्त हस्तक्षेप हैं, जो जनचेतना को जागृत करती हैं। वे सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को स्वर देते हुए पाठक को प्रश्न करने और परिवर्तन की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी भाषा की सादगी, व्यंग्यात्मकता और तीक्ष्णता उन्हें विशिष्ट बनाती है। इस प्रकार, धूमिल का काव्य अपने समय का दस्तावेज़ होने के साथ-साथ मानवतावादी मूल्यों की पुनर्स्थापना का सशक्त माध्यम भी है, जो आज के संदर्भ में भी उतना ही प्रासंगिक प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, बच्चन। (2021)। आधुनिक हिंदी का इतिहास। लोकभारती प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 299
2. पाण्डेय, रत्नशंकर। (2023)। धूमिल समग्र। राजकमल प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 21
3. पाण्डेय, रत्नशंकर। (2023)। धूमिल समग्र। राजकमल प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 283
4. प्रधान, अवधेश। (2016)। भारतीय साहित्य के निर्माता सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'। साहित्य अकादमी, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 56
5. राजपाल, हुकुमचंद। (2016)। समकालीन बोध और धूमिल का काव्य। वाणी प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 132
6. गुप्त, गणपतिचंद्र। (2010)। हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास। लोकभारती प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 286
7. गुप्त, गणपतिचंद्र। (2010)। हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास। लोकभारती प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 293
8. चतुर्वेदी, रामस्वरूप। (2021)। हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास। लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 237
9. प्रधान, अवधेश। (2016)। भारतीय साहित्य के निर्माता सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'। साहित्य अकादमी, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 38
10. गुप्त, गणपतिचंद्र। (2010)। हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास। लोकभारती प्रकाशन, दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 292